प्रातः क्लास ओमशान्ति 23-8-67

गीत:- न वो हम से जुदा होंगे:- ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे प्रतिज्ञा करते हैं बेहद के बाप से बाबा हम आप के बने हैं। अन्त तक, जब तक हम शान्ति धाम पहुँचे आप को याद करते रहेंगे। आप को प्यार करते रहेंगे। क्योंकि आत्मायें समझती हैं परमात्मा बाप को याद करने से हमारे जन्म-जन्मान्तर के पाप जो सिर पर है। वह भस्म हो जावेगा। उनको योग अग्नि कहा जाता है। और कोई उपाय नहीं। पतित पावन भी एक को, श्री, श्री 108 जगद्गुरु भी एक परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। और कोई को कहना नहीं चाहिए। परन्तु यहाँ तो अनेक मनुष्य हैं। जो अपन को श्री, श्री 108 जगद्गुरु कहलाते है। जगत माना विश्व का। यह पत्थर बुद्धि मनुष्य समझते नहीं। अभी तुम जो पारस बुधि बन रहे हो समझते हो यह तो बिलकुल रांग हैं। एक ही बाप है सर्व का सदगति दाता पतित पावन है। और फिर कलयुगी पतित मनुष्य अगर अपन को श्री श्री 108 जगद्गुरु कहलायें तो यह कितनी इनसल्ट है। पत्थर बुधि मनुष्य होने कारण इनसल्ट भी समझते नहीं हैं। जगत का बाप, जगत का शिक्षक, जगत का गुरु तो एक ही है। उन्हों की शिक्षा है शास्त्रों की। इनकी शिक्षा ही अलग है। जो भी ऋषि मुनि आद होकर गये हैं उन्हों को इस नालेज का पता नहीं है। रचना की आद मध्य अन्त का ज्ञान बाप ही देते हैं। मनुष्य जो अपन को जगद्गुरु कहलाते हैं वह भी ज्ञान दे न सके। मनुष्य जगत का शिक्षक है नहीं। इसलिए बाबा ने एक लिखत बनाई है इसका भी बोर्ड होना चाहिए। विश्व की सदगति दाता श्री, श्री 108 जगद्गुरु कौन? एक परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव वा अनेक कलयुगी पतित पुजारी मनुष्य? यह है ही पतित दुनिया। इन में एक भी पावन होना इमपासिबुल है। पतित-पावन बाप है सर्व की सदगति करते हैं। तुम अभी उन के बच्चे बने हो। तुम सिख रहे हो कि जगत को पावन कैसे बना सकते हैं। बाबा नये2 बोर्ड बनवाय रहे हैं। सेमीनार में यह बातें निकली नहीं। त्रिमूर्ति आद चित्रों की ब्लोक भी बहुत अच्छी बनानी है। कोई भी अच्छी ब्लोक बना नहीं सकते हैं। न किसकी बुध में इतना बैठता है। गीता के भगवान वाला चित्र भी बाबा बनवाये रहे हैं। एक गीता पर कृष्ण का चित्र, दूसरी गीता पर त्रिमूर्ति शिव का चित्र। सिर्फ शिव का नहीं। निराकार शिव ज्ञान कैसे देवे। शिव के आगे त्रिमूर्ति जरूर चाहिए। बच्चों को ब्रह्मा की समझानी देने में कठिनाई होती है। तो समझते हैं सिर्फ कृष्ण का और शिव का चित्र डालें। परन्तु नहीं। शिव जरूर कोई मुख से ज्ञान देंगे ना। और एम आबजेक्ट क्या है। वह भी साथ में चाहिए। त्रिमूर्ति के चित्र में सब आ जाता है। ब्रह्मा भी जरूर पुरुषार्थ करता होगा। ब्रह्मा ही सो नारायण बनते हैं। इसलिए विष्णु का चित्र दिया है। सिर्फ नारायण शोभेगा नहीं। तो एक तरफ कृष्ण का चित्र दूसरे तरफ त्रिमूर्ति शिव जरूर देना है: और त्रिमूर्ति के नीचे लिखत भी जरूर देनी है। यह भी लिखना है डिटी सावरन्टी आप का जन्म सिद्ध अधिकार है। सो भी अभी कल्प के संगम युगे-युगे। क्लियर लिखने बिगर पत्थर बुधि मनुष्य समझ नहीं सकते हैं। और दूसरी बात सिर्फ ब्रह्माकुमारी नाम जो पड़ता है उसमें प्रजापिता अक्षर जरूर चाहिए। क्योंकि ब्रह्मा नाम बहुतों का है। प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय लिखना है। कुमार अक्षर न डाला तो हर्जा नहीं। उसके नीचे फिर लिखो " गाड फादरली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी "। बहुत बच्चे डरते है कि कहाँ गवर्मेन्ट जेल में न डाल दे। इसमें डरने की तो बात ही नहीं। बड़े2 आदमी गांधी, नेहरू आद जैसे जेल में पड़े हैं। सन्यासि गुरु लोग भी अभी तक जेल में पड़े हैं। बाप कब ऐसा काम नहीं करेंगे जो बच्चे जेल में जावें। तुम लिख सकते हो गाड फादरली वर्ल्ड युनिवर्सिटी। आगे सिर्फ गाडली लिखते थे परन्तु नहीं गाड फादरली अक्षर डालना है। क्योंकि तुमको गाड फादर पढ़ाते हैं। अब ऐसा अच्छा ब्लाक सुना तो नहीं क्या गवर्मेन्ट। बनाने वालों को डैरेक्शन देते हैं ब्लाक बनवाने। कोई2 के ब्लाक तो ऐसे बने हुये हैं जैसे बुध लोग। कोई भी अर्थ नहीं समझ सकते। पत्थर बुधियों को क्लियर कर देना होता है। पारस बुधि बनाने वाला है ही एक बाप। मनुष्य मनुष्य को पारस बुधि बनायें न सके। पत्थर जैसे विश्व को पावन पारस तो बाप ही बनावेंगे। इस समय एक भी पावन है नहीं। मनुष्य सृष्टि बदल गई कि जानवर मिसल बन पड़े हैं। परन्तु मनुष्य अपन को जानवर मिसल समझते थोड़े ही हैं। एक दो में लड़ते गालियां देते रहते हैं।

भूं2 करते रहते हैं। गालियां देना तो आसुरी मनुष्य का पहला धर्म है। बाप कहते हैं पहले2 तो मुझे गाली देते हो। कक्ष-मक्ष अवतार ... फिर अवतार किसको कहा जाता है समझते नहीं है। अवतार तो ××× होता ही एक का है। वह भी अलौकिक रीत शरीर में प्रवेश कर विश्व ×× को स्वर्ग बनाते हैं?। और आत्माएं तो अपना2 शरीर लेते हैं। इनका ×× ××× अपना शरीर है नहीं। परन्तु ज्ञान का सागर है तो ज्ञान कैसे देंगें! शरीर चाहिए ना। इन बातों को तुम्हारे सिवाय कोई नहीं जानते। जो कुछ इस ब्राह्मण कुल के हैं वह समझते हैं। और अच्छा2 ××××× भी कहते हैं। परन्तु फिर मुसिबत है गृहस्त व्यवहार में रह पवित्र बनना यह बड़ा बाहुदुरी का काम हैं। महावीर कहते हैं ना। महावीर अर्थात वीरता दिखावे। यह भी वीरता हैं। जो काम सन्यासि न कर सकते ×× वह तुम कर सकते हो। बाप × श्रीमत देते हैं तुम ऐसे गृहस्त व्यवहार पवित्र रह सकते हो कमल फूल समान। तब ही ऊंच पद पाये सकेंगें। नहीं तो विश्व की बादशाहि कैसे फिर मिलेगी। पढ़ना है। यह है ही नर से नारायण बनने की पढ़ाई। यह पाठशाला है। बहुत पढ़ते है। इसलिए लिखो गाड फादरली युनिवर्सिटी ईश्वरी विश्व-विद्यालय। यह तो बिलकुल राईट अक्षर है। भारतवासी जानते है हम विश्व के मालिक थे। कल की बात है। अभी तक राधा कृष्ण के मंदिर बनते रहते हैं। कई तो फिर पतित मनुष्यों के भी बनाते रहते हैं। द्वापर से लेकर तो हैं ही पतित मनुष्य। कहां शिव, देवताओं का मंदिर बनाना, कहां यह पतित मनुष्यों का। यह कोई देवता थोड़े ही हैं। तो बाप समझाते है। इन बातों पर ठीक रीत विचार सागर मथन ××××× न करने से कोई भी श्लोक पूरा बनाये नहीं सकते। इतने सेन्टर्स हैं। श्लोक सबके पास अच्छा होना चाहिए। नहीं तो कोई कैसे : कोई कैसे बनाते रहते हैं। श्लोक बाम्बे में अच्छ बन सकती है। तो बम्बई वालों को बनानी चाहिए। बाबा तो समझाते रहते है। दिन प्रति दिन लिखत चेंज ~~होती रहेंगी। फिर कहेंगे और समझाओ। ऐसे नहीं मिल सकते कोई नहीं ऐसा [illegible]~~ क्यों नही मनमनाभव का अर्थ ऐसे समझाया। और पहले थोड़े ही ऐसे याद में ठहर सकेंगें। बहुत थोड़े बच्चे है जो हरेक बात का रेसपान्ड पूरी रीत कर सकते हैं। तकदीर में ऊंच पद न है तो टिचर क्या करेंगें। ×××× ऐसे नहीं ××× आशीर्वाद से ऊंच पद पाये लेंगे। अपन को देखना है। हम कैसे सर्विस करते हैं। विचार सागर मथन चलना चाहिए। यह गीता का भगवान कौन? यह चित्र बहुत जरुरी है। क्यों कि यह है बड़ी से बड़ी भूल। सन्यासि लोग चेन्ज कैसे करे। वह तो शास्त्रों से पढ़ा हुआ ज्ञान ही सुनाते है। अपनी बुधि तो है नहीं। गीताएं बहुत बनाते है। समझते कुछ भी नहीं। बाप कहते न ऐसे श्लोक हैं, न उनका यह अर्थ हैं। न गीता का भगवान कृष्ण है। यह मनुष्यों ने ×××× बड़ाई कर दी हैं। कहते है व्यास भगवान ने बनाई। अब भगवान है निराकार। वह ब्रह्मा के शरीर ××× ××× बिगर तो बनाये न सके। वह आते हो है ब्रह्मा के तन में। संगम युग पर। नहीं तो ब्रह्मा विष्णु शंकर वायु के लिए है। बायोग्राफी चाहिए ना। कोई भी जानते नहीं। ब्रह्मा के लिए कहते हैं 100 भुजा वाला ब्रह्मा पास जाओ। 1000 भुजा वाले पास जाओ। इस पर भी ऐ कहानी बनाई हुई है। बाप कहते हैं बड़ी गपोड़े आद की बात नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा के ढेर बच्चे है ना। यहां आते ही है पवित्र बनने। जन्म जन्मान्तर अपवित्र बनते आये है। अब पूरा पवित्र बनना है। श्रीमत मिलती है मामेकं याद करो। कोई ×××× तो अभी तक भी समझ में नही आता कि हम याद कैसे करे। मूंझ पड़ते है। बाप का बन और विकर्माजीत न बने तो पाप न कटे। याद की यात्रा में न रहे तो ऊंच क्या पद पावेंगे। भल सरेन्डर है। परन्तु इन से क्या फायदा। जब तक पुण्यात्मा बन औरों को न बनावे तब तक ऊंच पद पाये न सकेंगें। जितना थोड़ा याद करेंगें कम पद पावेंगे ×× डबल ताज कैसे बनेंगें। फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार देरी से आवेंगे। ऐसे नहीं उसने सब कुछ सरेन्डर किया है इसलिए डबल सिरताज बनेंगे। नहीं। पहले दास दासियां बनते2 फिर पिछाड़ी में थोड़ा मिल जावेगा। बहुत को यह अहंकार रहता है हम तो सरेन्डर हैं। और याद बिगर क्या बन सकेंगे। दास दासी बनने से साहूकार प्रजा बनना अच्छा है। दास दासी भी कोई कृष्ण को थोड़े ही झूले में झूल सकेंगे। यह गहन समझने की बातें हैं? इसमें बड़ा मेहनत कर करनी पड़े।